श्री निर्ग्रन्थ प्रवचन

विषयानुक्रम

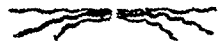

प्रथम अध्याय षट्द्रव्य निरूपण

१ निर्ग्रन्थ प्रवचन का अर्थ १
२ आत्मतत्त्व विचार २
३ आत्मसिद्धि ५
४ आत्मा का कर्तृत्व ८
५ कर्मफल का भोग १२
६ आत्मदमन और चित्तशुद्धि १५
७ आत्मा और शरीर की भिन्नता १६
८ आत्मदमन के साधन १८
९ आत्मदमन से लाभ १९
१० भौतिक युद्ध और आन्तरिक युद्ध २०
११ आत्मशुद्धि २२
१२ आत्मा और इन्द्रियों का संबंध २५
१३ आत्मा और शरीर २६
१४ संसार-निस्तार २७
१५ जीव के लक्षण २८
१६ उपयोग का विशेष लक्षण ३०
१७ नव तत्त्व-विचार ३२
१८ लोक स्वरूप ४६
१९ षट्द्रव्य निरूपण ५०
२० द्रव्य, गुण और पर्याय ६५
२१ द्रव्य विचार ६६
२२ स्याद्वाद ७५
२३ पर्याय का स्वरूप ७७
२४ लक्षण का लक्षण ७९

द्वितीय अध्याय-कर्म निरूपण

१ कर्म शब्द की व्युत्पत्ति ८०
२ कर्म के भेद ८१
३ मूर्त का मूर्त्त के साथ संबंध ८२
४ कर्म की व्यापकता ८२
५ कर्म पौद्गलिक हैं ८३
६ कर्मों के क्रम की उपपत्ति ८५
७ कर्मों का स्वरूप ८६
८ कर्मों की विभिन्न शक्तियां ८७
९ ज्ञानावरण कर्म का निरूपण ८८
१० दर्शनावरण कर्म का निरूपण ८९
११ वेदनीय कर्म का निरूपण ९१
१२ मोहनीय कर्म का निरूपण ९३
१३ मिथ्यात्व के दस भेद ९६
१४ चारित्र मोह का निरूपण ९७
१५ कषाय और प्रतिक्रमण ९८
१६ कषायों का विवेचन ९८
१७ नोकषाय का अर्थ ९९
१८ आयु कर्म का निरूपण १०१
१९ आयु का बंध १०२
२० नाम कर्म का निरूपण १०३
२१ गोत्र कर्म का लक्षण १०६
२२ गोत्र कर्म और अस्पृश्यता १०७
२३ अन्तराय कर्म का निरूपण १०८
२४ कर्मप्रकृतियों के विभाग ११०
२५ कर्मों की स्थिति १११
२६ सागरोपम का अर्थ ११२
२७ कर्मों के फल ११४
२८ कर्म फलदाता है ११५
२९ कर्म अमोघ है ११६
३० कर्त्ता ही कर्म फल भोगता है ११८
३१ परिग्रह साथ नहीं देता १२१
३२ मोह कर्म का कारण १२३
३३ राग-द्वेष १२५

३४ राग-द्वेष-विनय १२७

अध्याय तृतीय-धर्म स्वरूप वर्णन

१ मानव जीवन १३०
२ आठ परिवर्तन १३१
३ त्रस पर्याय की दुर्लभता १३३
४ यथा कर्म तथा फल १३५
५ मनुष्य की दस दशाएँ १३६
६ जीवन की भंगुरता १३८
७ धर्म श्रुति की दुर्लभता १३९
८ धर्म उत्कृष्ट मंगल है १४०
९ अहिंसा धर्म १४४
१० संयम और तप १४९
११ धर्म का मूल-विनय १५१
१२ विनय के सात भेद १५२
१३ धर्म का पात्र १५५
१४ धर्म के लिए प्रेरणा १५६
१५ निष्फल और सफल जीवन १५७
१६ धर्म की स्थिरता १५८
१७ धर्म ही शरण है १५९
१८ धर्म की ध्रुवता १६०

चतुर्थ अध्याय-आत्म शुद्धि के उपाय

१ नरक-तिर्यंच गति के के दुःख १६२
२ मनुष्य-देव गति के दुःख १६३
३ संसार की विचित्रता १६५
४ बत्तीस योग संग्रह १६८
५ तीर्थंकर गोत्र के बीस कारण १७०
६ अशुद्धि के कारण १७३
७ अकाल मृत्यु १७४
८ अधोगति-उच्चगति १७७
९ यत्नापूर्वक प्रवृत्ति १७८
१० देवलोक-गमन १७९
११ आध्यात्मिक अग्नि होत्र १८१
१२ आध्यात्मिक स्नान १८२

पंचम अध्याय-ज्ञान प्रकरण

१ पांच ज्ञान १८७
२ ज्ञानों के क्रम की उत्पत्ति १८८
३ मतिज्ञान श्रुतज्ञान का अन्तर १८९
४ उपयोग का क्रमविकास १९०
५ अवग्रह के भेद १९१
६ चक्षु-मन अप्राप्यकारी हैं १९२
७ इन्द्रियों की विषयग्रहण शक्ति १९३
८ श्रुतज्ञान के दो भेद १९३
९ श्रुतज्ञान के चौदह भेद १९३
१० अवधि ज्ञान के भेद १९५
११ मनःपर्याय ज्ञान १९६
१२ केवल ज्ञान १९८
१३ ज्ञान का विषय-ज्ञेय १९९
१४ शून्यवादी का पूर्वपक्ष और खंडन २००
१५ ज्ञान स्वसंवेदी है २०१
१६ ज्ञान की महिमा २०२
१७ ज्ञान प्राप्ति का उपाय २०४
१८ श्रोता के गुण २०४
१९ श्रुत ज्ञान की उपयोगिता २०६
२० अविद्या का फल २०८
२१ ज्ञान और क्रिया २०८
२२ क्रिया की आवश्यकता २१०
२३ एकान्त ज्ञानवादी का समाधान २१३
२४ ज्ञानैकान्त का विषय फल २१५
२५ सच्चा ज्ञानी २१८
२६ समभाव २२०

छठा अध्याय-सम्यक्त्वनिरूपण

१ सम्यग्दर्शन २२४
२ देव, गुरु, धर्म का स्वरूप २२४
३ सम्यक्त्व प्राप्ति २२५
४ सम्यक्त्व की आवश्यकता २२७
५ सम्यक्त्व की स्थिरता के उपाय २२८
६ कालवादी २३१

श्री निर्ग्रन्थ प्रवचन

विषयानुक्रम

प्रथम अध्याय षट्द्रव्य निरूपण

१ निर्ग्रन्थ प्रवचन का अर्थ १
२ आत्मतत्त्व विचार २
३ आत्मसिद्धि ५
४ आत्मा का कर्तृत्व ८
५ कर्मफल का भोग १२
६ आत्मदमन और चित्तशुद्धि १५
७ आत्मा और शरीर की भिन्नता १६
८ आत्मदमन के साधन १८
९ आत्मदमन से लाभ १९
१० भौतिक युद्ध और आन्तरिक युद्ध २०
११ आत्मशुद्धि २२
१२ आत्मा और इन्द्रियों का संबंध २५
१३ आत्मा और शरीर २६
१४ संसार-निस्तार २७
१५ जीव के लक्षण २८
१६ उपयोग का विशेष लक्षण ३०
१७ नव तत्त्व-विचार ३२
१८ लोक स्वरूप ४६
१९ षट्द्रव्य निरूपण ५०
२० द्रव्य, गुण और पर्याय ६५
२१ द्रव्य विचार ६६
२२ स्याद्वाद ७५
२३ पर्याय का स्वरूप ७७
२४ लक्षण का लक्षण ७९

द्वितीय अध्याय-कर्म निरूपण

१ कर्म शब्द की व्युत्पत्ति ८०
२ कर्म के भेद ८१
३ मूर्त का मूर्त्त के साथ संबंध ८२
४ कर्म की व्यापकता ८२
५ कर्म पौद्गलिक हैं ८३
६ कर्मों के क्रम की उपपत्ति ८५
७ कर्मों का स्वरूप ८६
८ कर्मों की विभिन्न शक्तियां ८७
९ ज्ञानावरण कर्म का निरूपण ८८
१० दर्शनावरण कर्म का निरूपण ८९
११ वेदनीय कर्म का निरूपण ९१
१२ मोहनीय कर्म का निरूपण ९३
१३ मिथ्यात्व के दस भेद ९६
१४ चारित्र मोह का निरूपण ९७
१५ कषाय और प्रतिक्रमण ९८
१६ कषायों का विवेचन ९८
१७ नोकषाय का अर्थ ९९
१८ आयु कर्म का निरूपण १०१
१९ आयु का बंध १०२
२० नाम कर्म का निरूपण १०३
२१ गोत्र कर्म का लक्षण १०६
२२ गोत्र कर्म और अस्पृश्यता १०७
२३ अन्तराय कर्म का निरूपण १०८
२४ कर्मप्रकृतियों के विभाग ११०
२५ कर्मों की स्थिति १११
२६ सागरोपम का अर्थ ११२
२७ कर्मों के फल ११४
२८ कर्म फलदाता है ११५
२९ कर्म अमोघ है ११६
३० कर्त्ता ही कर्म फल भोगता है ११८
३१ परिग्रह साथ नहीं देता १२१
३२ मोह कर्म का कारण १२३
३३ राग-द्वेष १२५

३४ राग-द्वेष-विनय १२७

अध्याय तृतीय-धर्म स्वरूप वर्णन

१ मानव जीवन १३०
२ आठ परिवर्तन १३१
३ त्रस पर्याय की दुर्लभता १३३
४ यथा कर्म तथा फल १३५
५ मनुष्य की दस दशाएँ १३६
६ जीवन की भंगुरता १३८
७ धर्म श्रुति की दुर्लभता १३९
८ धर्म उत्कृष्ट मंगल है १४०
९ अहिंसा धर्म १४४
१० संयम और तप १४९
११ धर्म का मूल-विनय १५१
१२ विनय के सात भेद १५२
१३ धर्म का पात्र १५५
१४ धर्म के लिए प्रेरणा १५६
१५ निष्फल और सफल जीवन १५७
१६ धर्म की स्थिरता १५८
१७ धर्म ही शरण है १५९
१८ धर्म की ध्रुवता १६०

चतुर्थ अध्याय-आत्म शुद्धि के उपाय

१ नरक-तिर्यंच गति के के दुःख १६२
२ मनुष्य-देव गति के दुःख १६३
३ संसार की विचित्रता १६५
४ बत्तीस योग संग्रह १६८
५ तीर्थंकर गोत्र के बीस कारण १७०
६ अशुद्धि के कारण १७३
७ अकाल मृत्यु १७४
८ अधोगति-उच्चगति १७७
९ यत्नापूर्वक प्रवृत्ति १७८
१० देवलोक-गमन १७९
११ आध्यात्मिक अग्नि होत्र १८१
१२ आध्यात्मिक स्नान १८२

पंचम अध्याय-ज्ञान प्रकरण

१ पांच ज्ञान १८७
२ ज्ञानों के क्रम की उत्पत्ति १८८
३ मतिज्ञान श्रुतज्ञान का अन्तर १८९
४ उपयोग का क्रमविकास १९०
५ अवग्रह के भेद १९१
६ चक्षु-मन अप्राप्यकारी हैं १९२
७ इन्द्रियों की विषयग्रहण शक्ति १९३
८ श्रुतज्ञान के दो भेद १९३
९ श्रुतज्ञान के चौदह भेद १९३
१० अवधि ज्ञान के भेद १९५
११ मनःपर्याय ज्ञान १९६
१२ केवल ज्ञान १९८
१३ ज्ञान का विषय-ज्ञेय १९९
१४ शून्यवादी का पूर्वपक्ष और खंडन २००
१५ ज्ञान स्वसंवेदी है २०१
१६ ज्ञान की महिमा २०२
१७ ज्ञान प्राप्ति का उपाय २०४
१८ श्रोता के गुण २०४
१९ श्रुत ज्ञान की उपयोगिता २०६
२० अविद्या का फल २०८
२१ ज्ञान और क्रिया २०८
२२ क्रिया की आवश्यकता २१०
२३ एकान्त ज्ञानवादी का समाधान २१३
२४ ज्ञानैकान्त का विषय फल २१५
२५ सच्चा ज्ञानी २१८
२६ समभाव २२०

छठा अध्याय-सम्यक्त्वनिरूपण

१ सम्यग्दर्शन २२४
२ देव, गुरु, धर्म का स्वरूप २२४
३ सम्यक्त्व प्राप्ति २२५
४ सम्यक्त्व की आवश्यकता २२७
५ सम्यक्त्व की स्थिरता के उपाय २२८
६ कालवादी २३१

७ स्वभाववादी २३२
८ नियतिवादी २३३
९ कर्मवादी २३४
१० उद्यमवादी २३४
११ क्रियावादी २३५
१२ अक्रियावादी २३५
१३ अज्ञानवादी २३६
१४ विनयवाद २३६
१५ सम्यक्त्व के दस भेद २३८
१६ सम्यक्त्व के अनेक प्रकार से भेद २३९
१७ सम्यक्त्व के अतिचार २४०
१८ ,, भूषण २४१
१९ ,, की भावनाएँ २४१
२० सम्यक्त्व की महिमा २४३
२१ रत्नत्रय का पूर्वापर भाव २४४
२२ सम्यक्त्व के आठ अंग २४६
२३ बोधि की सुलभता २४८
२४ परीत संसारी २४९
२५ सम्यग्दृष्टि और पाप २५१

सातवां अध्याय–धर्मनिरूपण

१ सकल चारित्र–विकल चारित्र २५३
२ सकल चारित्र २५४
३ विकल चारित्र २५४
४ अहिंसाणुव्रत २५४
५ सत्याणुव्रत २५८
६ अस्तेय व्रत २६०
७ ब्रह्मचर्याणुव्रत २६१
८ परिग्रहपरिमाणव्रत २६२
९ तीन गुणव्रत २६४
१० गुणव्रतों के अतिचार २६७
११ चार शिक्षाव्रत २६८
१२ श्रावक धर्म का अधिकारी २७३
१३ कर्मादान २७४
१४ श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ २७६
१५ क्षमायाचना २७७
१६ गृहस्थधर्म का फल २७९
१७ विषयभोग की कामना का त्याग २८२
१८ दाता और दानगृहिता २८३
१९ साधु और गृहस्थ की तुलना २८४
२० दुश्शील त्यागी २८६
२१ रात्रि भोजन त्याग २८७
२२ सच्चा ब्राह्मण २८९
२३ बाह्याचार की निरर्थकता २९३
२४ आन्तरिक आचार की सार्थकता २९५
२५ कर्म से वर्ण व्यवस्था २९५

आठवां अध्याय-ब्रह्मचर्य निरूपण

१ ब्रह्मचर्य की रक्षा के उपाय २९८
२ स्त्री शरीर और ब्रह्मचर्य ३००
३ ब्रह्मचारी का निवास स्थान ३०१
४ स्त्री-संसर्ग का त्याग ३०२
५ स्त्री के अंगोपांग देखने का त्याग ३०२
६ स्त्री आसक्ति का त्याग ३०३
७ मूढ़ पुरुष की दुर्गति ३०५
८ काम भोग विष है ३०५
९ काम भोगों की अस्थिरता ३०७
१० काम भोग किंपाक फल हैं ३०८
११ भोग बंध के कारण है ३०९
१२ काम का प्रबल आकर्षण ३१०
१३ ब्रह्मचारी की महिमा ३१३
१४ ब्रह्मचर्य से लाभ ३१५
१५ वीर्य का महत्व ३१६
१६ ब्रह्मचर्य संबंधी भ्रम–निराकरण ३१७
१७ ब्रह्मचर्य साधना के उपाय ३१८
१८ ब्रह्मचारी का तेज ३२०

अध्याय नववाँ-साधुधर्म

१ महाव्रतों की मुख्यता ३२२
२ अहिंसा ३२३
३ जीव और प्राणी का भेद ३२४
४ मृषावाद की निन्दा ३२५

५ सत्य का प्रभाव ३२६
६ असत्य के भेद ३२७
७ सत्यव्रत की भावनाएँ ३२८
८ अदत्तादान त्याग ३२९
९ अदत्तादान की भावनाएँ ३२९
१० अदत्तादान के भेद ३३०
११ मैथुन त्याग ३३०
१२ संग्रह परिग्रह है ३३१
१३ अपरिग्रह व्रत ३३२
१४ रात्रि भोजन त्याग ३३४
१५ पृथ्वीकाय की रक्षा ३३६
१६ वायु और वनस्पति काय की परिक्षा ३३७
१७ भिक्षा के नियम ३३९
१८ भिक्षा के दोष ३४०
१९ आहार करने का प्रयोजन ३४३
२० मुनि का समभाव ३४४
२१ ज्ञान चारित्र शरण है ३४६
२२ जातिभेद और कुलभेद ३४६
२३ बुद्धिमद और लाभमद ३४७
२४ साधु निष्काम हो ३४९
२५ जीवन अनाचीर्ण ३५०
२६ मानसिक चपलता का त्याग ३५३
२७ साधु की बारह पडिमाएँ ३५४
२८ करण सत्तरी के सत्तर भेद ३५५
२९ चरण सत्तरी ,, ३५६
३० आठ प्रभावनाएँ ३५७
३१ धर्म कथा के चार भेद ३५८
३२ कला की सार्थकता ३६१
३३ साधु की बारह उपमाएँ ३६१
३४ बीस असमाधि दोष ३६४

दसवां अध्याय-प्रमादपरिहार

१ जीवन की भंगुरता ३६६
२ प्रमाद के पाँच प्रकार ३६७
३ विकथाओं के भेद-प्रभेद ३६८
४ एक 'समय' का महत्व ३७१
५ जीवन ओस की बूंद सदृश है ३७२
६ जीवन के उपक्रम ३७३
७ मनुष्यत्व की दुर्लभता ३७४
८ जीव का स्थावर काय में निवास ३७५
९ पृथ्वी में आत्मा है ३७८
१० वनस्पति की सजीवता ३७८
११ जल की सजीवता ३७९
१२ अग्नि की सजीवता ३७९
१३ वायु काय की सजीवता ३८०
१४ जीव की विकलेन्द्रिय दशा ३८१
१५ जीव की पंचेन्द्रिय दशा ३८२
१६ पंचेन्द्रिय जीवों के भेद ३८२
१७ जीव का भवभ्रमण ३८३
१८ आर्यत्व की दुर्लभता ३८४
१९ आर्य-अनार्य का विवेचन ३८४
२० अविकल-इन्द्रियों की दुर्लभता ३८५
२१ धर्म श्रवण की दुर्लभता ३८७
२२ तीर्थ का स्वरूप और भेद ३८७
२३ धर्म श्रद्धा की दुर्लभता ३८८
२४ धर्मस्पर्शता की दुर्लभता ३८९
२५ जीवन क्षीण हो रहा है ३८९
२६ जीवन के खतरे ३९२
२७ शारीरिक ममता का त्याग ३९३
२८ त्याग पर निश्चल रहने का उपदेश ३९५
२९ काल के छह आरे ३९७
३० द्रव्य कंटक-भावकंटक ३९८
३१ उद्बोधन ३९९
३२ सिद्धि लोक ४०१

ग्यारहवां अध्याय-भाषा स्वरूप वर्णन

१ भाषा की पुद्गल रूपता विविध शंका समाधान ४०३
२ भाषा और संकेत ४०६
३ शब्द कैसे सुना जाता है ? ४०७
४ शब्दाद्वैत का निरसन ४०८

५ भाषा के चार भेद ४०६
६ सत्य भाषा के दस भेद ४१०
७ असत्य भाषा के चार भेद ४११
८ ,, दस भेद ४१२
९ सत्यासत्य भाषा के दस भेद ४१३
१० व्यवहार भाषा के बारह भेद ४१५
११ श्रुताश्रित भाव भाषा ४१६
१२ चारित्राश्रित भाव भाषा ४१६
१३ भाषा का आदि करण ४१७
१४ बोलने योग्य भाषा ४१७
१५ न बोलने योग्य भाषा ४१८
१६ बोलने का विवेक ४२१
१७ वचन-कण्टक ४२२
१८ भाषण संबंधी नियम ४२५
१९ बहुभाषी की दुर्गति ४२६
२० कुशील और विष्ठा ४२७
२१ स्वदोष संम्बधी सत्य भाषण ४२८
२२ ज्ञानियों के विरुद्ध व्यवहार ४२९
२३ सृष्टि संबंधी विभिन्न कथन ४३१
२४ कर्तृत्व का निरसन ४३१
२५ ईश्वर कर्तृत्व का निरसन ४३६
२६ प्रकृति के कर्तृत्व का निरसन ४४२
२७ कालवादी का पक्ष ४४४
२८ नियतिवादी का पक्ष ४४४
२९ यदृच्छावादी का मत ४४५
३० स्वयंभू-कर्तृत्व का खंडन ४४५
३१ अंडे से जगत् की उत्पत्ति का निरसन ४४७
३२ सृष्टि से पहले क्या था ? ४४८
३३ लोक का स्वरूप ४४९
३४ लोक की नित्यता ४५०

बारहवां अध्याय-लेश्या स्वरूप निरूपण

१ लेश्या का अर्थ ४५१
२ लेश्या के मूल भेद ४५१
३ लेश्या के दो दृष्टान्त ४५२
४ कृष्ण लेश्या का स्वरूप ४५३
५ नील लेश्या ,, ४५४
६ कापोत लेश्या ,, ४५५
७ पीत लेश्या ,, ४५६
८ पद्म लेश्या ,, ४५७
९ शुक्ल लेश्या ,, ४५७
१० लेश्याओं के वर्णन ४५७
११ ,, रस ४५८
१२ ,, की गंध ४५९
१३ ,, का स्पर्श ४५९
१४ ,, का परिणाम ४५९
१५ लेश्या और परलोक ४६०
१६ गतियों में लेश्या ४६१
१७ लेश्या वाले जीवों का अल्प बहुत्व ४६३
१८ लेश्याओं में गुणस्थान ४६४
१९ लेश्या और गति ४६५
२० अंशों में विविधता ४६६
४६७

तेरहवां अध्याय-कषाय वर्णन

१ कषाय की व्युत्पति ४६८
२ कषाय के मुख्य भेद ४६९
३ क्रोध, मान, माया, लोभ ४६९
४ क्रोधादि के भेद ४७१
५ कषायों का कार्य ४७२
६ क्रोध का कुफल ४७३
७ मान का वर्णन ४७४
८ माया से पापोपार्जन ४७५
९ लोभ की अमर्यादा ४७६
१० क्रोधादि का फल ४८०
११ क्रोधादि को जीतने का उपाय ४८३
१२ धर्म शरण है ४८५
१३ धन त्राता नहीं है ४८६
१४ अनुकरण-वृत्ति ४८९
१५ काल की प्रबलता ४८९

१६ कामभोगों के त्याग संबंधी भ्रम का निवारण ४६०
१७ नास्तिक की विचार धाराएँ और उनका निराकरण ४६२
१८ ग्रहस्थ और अहिंसा ४६५
१६ पर लोक न मानने का फल ४६६
२० नास्तिक का पश्चाताप ४६८
२१ आसुरी प्रकृति ५००
२२ नास्तिक की दुर्दशा ५०१
२३ पाप का फल कर्त्ता को ही भोगना पड़ता है ५०२
२४ मृत्यु का अर्थ ५०३
२५ मृत्यु के सत्तरह भेद ५०३
२६ आत्मा का पृथक्त्व ५०५
२७ संकल्पों की अनंतता ५०६

चोदहवां अध्याय-वैराग्य संबोधन

१ ऋषभदेव का उपदेश ५०७
२ मनुष्यभव के दस दृष्टान्त ५०८
३ आयु की अनित्यता ५१२
४ विवेकी का कर्त्तव्य ५१२
५ माता-पिता की सेवा पाप नहीं हैं ५१३
६ हिंसा न त्यागने का फल ५१५
७ हिंसा त्यागी महा पुरुष ५१६
८ अभिमान का फल ५१७
९ क्रिया और कीर्त्ति ५१८
१० भोगी और समाधि ५१८
११ अनुमान-आगम प्रमाण का समर्थन ५१९
१२ तर्क की अस्थिरता ५२१
१३ आगम की यथार्थता की परीक्षा ५२१
१४ गृहस्थ की सद्गति ५२२
१५ सुव्रती का अर्थ ५२३
१६ सुव्रत-आध्यात्मिक औषध ५२४
१७ मोक्षमार्ग अनादि है ५२४
१८ धर्मतत्त्व की एक रूपता ५२४
१९ शाश्वत धर्म का स्वरूप ५२५
२० मनुष्य भव की दुर्लभता ५२७
२१ तिर्यंचगति के कष्ट ५२८
२२ मनुष्यों और देवों के दुःख ५२८
२३ पापों का समाहरण ५३०
२४ ज्ञान का फल अहिंसा ५३१
२५ ज्ञानी पुरुष ५३३
२६ शुद्ध धर्मोपदेष्टा ५३४
२७ सावद्य क्रिया और कर्म ५३५
२८ सब जीव समान हैं ५३७
२९ ज्ञानी का समभाव ५३७
३० पर पदार्थों की भिन्नता ५३८

पन्द्रहवां अध्याय-मनोनिग्रह

१ मनोविजय की प्रधानता ५४०
२ इन्द्रिय निग्रह ५४१
३ मुनि की विचारधारा ५४२
४ मन के दो भेद ५४४
५ ,, चार भेद ५४४
६ मनोनिग्रह की कठिनाई ५४५
७ मनोनिग्रह का फल ५४७
८ चार ध्यान, उनके भेद-प्रभेद-लक्षण ५४८
९ धर्म ध्यान का निरूपण ५५०
१० आज्ञाविचय ५५०
११ अपायविचय ५५१
१२ विपाकविचय ५५२
१३ संस्थानविचय ५५३
१४ स्वाध्याय का स्वरूप ५५४
१५ पिण्डस्थ, पदस्थ आदि ध्यानों का स्वरूप ५५४
१६ पांच धारणाएँ ५५५
१७ योग संबंधी मंत्र ५५७
१८ शुक्लध्यान के चार भेद ५६०
१९ ध्यान के योग्य क्षेत्र-काल ५६१
२० ध्यान और आसन ५६१

२१ प्राणायाम के तीन भेद ५६२
२२ मन की चार प्रवृतियां ५६३
२३ संरंभ, समारंभ, आरंभ ५६४
२४ त्यागी का लक्षण ५६५
२५ मन का भोग से प्रत्यावर्त्तन ५६८
२६ आस्रव निरोध के साधन ५७१
२७ कर्मों का क्षय ५७२
२८ तप की महिमा ५७३
२९ बाह्यान्तर तप ५७४
३० बाह्य तपों का विवेचन ५७५
३१ अनशन तप के भेद-प्रभेद ५७५
३२ तपों के नक्शे ५७७
३३ आभ्यन्तर तप ५८८
३४ इन्द्रियों की परवशता ५९४

सोलहवां अध्याय-आवश्यक कृत्य

१ कर्म से मुक्ति ५९८
२ समभावी मुनि ६००
३ कष्ट में क्षमा ६०२
४ सकाम मरण के भेद ६०६
५ शिक्षा प्राप्ति और नम्रता ६०८
६ साधुकी आत्म साधना ६१०
७ आलोचना सुनने के अधिकारी ६१२
८ आवश्यक की आवश्यकता ६१५

सत्रहवां अध्याय नर्क स्वर्ग निरूपण

१ नरकों के नाम ६२९
२ परमाधार्मिक देवता ६३२
३ नारकी के कष्ट ६३६
४ देवगति वर्णन ६४४
५ ज्योतिषी देव ६४९
६ वैमानिक देव ६५०
७ नौ ग्रैवेयक ६५३
८ देव कहां जन्मते हैं ६६०

अठारहवां अध्याय-मोक्ष स्वरुप

१ विनीत के लक्षण ६६४
२ अविनीत के लक्षण ६७०
३ विनय का फल ६७६
४ गुण स्थानों का स्वरूप ६८०
५ सच्चा सुख ७०४